❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 47, अंक 49 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 अक्तूबर, 2024 से रविवार 27 अक्तूबर, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

141वें निर्वाण दिवस (दीपावली) पर विशेष

दीपावली और दयानन्द

- डॉ. महेश विद्यालंकार

दीपावली का पावन पर्व जड़ चेतन सभी में प्रसन्नता उमंग और उत्साह फैला रहा था। सारा नगर पर्व की खुशी में डूबा हुआ था। अजमेर के भिनाई भवन में देवपुरुष शान्त भाव से लेटे हुए थे। सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ रहा था। ऋषि ने शौच कर्म से निवृत होकर क्षोर कर्म कराने की इच्छा प्रकट की। उपस्थित भक्तों ने नम्र भाव से कहा-महाराज सारे मुख पर छाले हैं। खून निकल जायेगा कष्ट होगा किन्तु उस पुण्यात्मा को अनुभूति हो रही थी कि आज प्रयाण बेला है। पूछा-आज कौन सा मास, पक्ष और दिन है। किसी भक्त ने कहा-महाराज आज कार्तिक मास की अमावस्या पर दीपावली का पर्व है। ऋषिवर के मुख मण्डल पर शान्ति और प्रसन्नता थी। बड़े सहज भाव से भक्तों से बातचीत कर रहे थे। सबको धैर्य प्रेमपूर्वक और संगठित होकर रहने का उपदेश दे रहे थे। थोड़ी देर के बाद बोले सभी दरवाजे और खिड़कियां खोल दो। ऋषि ने ऊपर की ओर दृष्टि करके चारों ओर अलौकिक व चमत्कारी दृष्टि से देखा, गायत्री मन्त्र का पाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। शान्त भाव में मुख से उच्चारित होने लगा-

"हे दयामय सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। अद्भुत तेरी लीला है।"

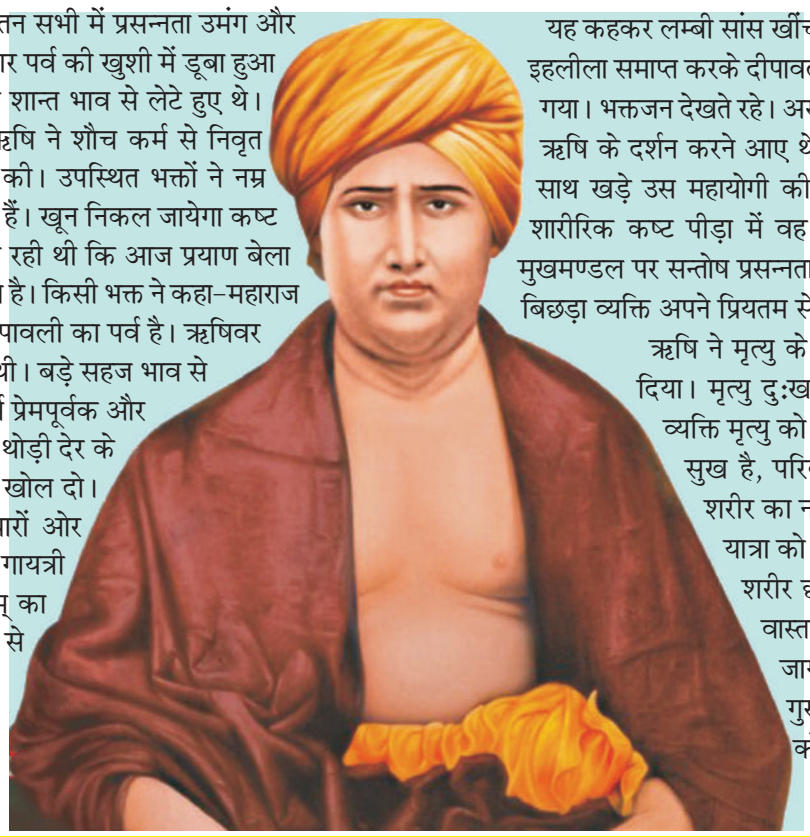

यह कहकर लम्बी सांस खींची और बाहर निकाल दी। वह महान् योगी इहलीला समाप्त करके दीपावली के पर्व पर ज्योतिर्मय की शरण में चला गया। भक्तजन देखते रहे। असहाय बन कर खड़े रहे। गुरुदत्त प्रथम बार ऋषि के दर्शन करने आए थे। ईश्वर में दृढ़ आस्था न थी। भक्तों के साथ खड़े उस महायोगी की महायात्रा देख रहे थे। अपार मर्मान्तक शारीरिक कष्ट पीड़ा में वह दिव्य पुरुष शान्त एवं आनन्दमग्न थे। मुखमण्डल पर सन्तोष प्रसन्नता व शान्ति थी, ऐसे जा रहे थे जैसे युगों से बिछड़ा व्यक्ति अपने प्रियतम से मिलने जा रहा हो।

ऋषि ने मृत्यु के रूप-स्वरूप में एक नया अध्याय जोड़ दिया। मृत्यु दु:ख नहीं सुख है। यह निर्भर करता है कि व्यक्ति मृत्यु को लेता कैसे है? ज्ञानी व्यक्ति के लिए मृत्यु सुख है, परिवर्तन है। जीर्ण-शीर्ण जरित व रोग भरे शरीर का नवीनीकरण है। गुरुदत्त ऋषि की अन्तिम यात्रा को बड़े ध्यान मग्न होकर देख रहे थे। उनको शरीर छोड़ते देख कर हृदय परिवर्तित हो गया। वास्तविकता की ग्रन्थियां खुल गई । आस्तिकता जाग पड़ी। जाते-जाते भी वह उपकारी ऋषि गुरुदत्त जैसे समर्पित एवं भावनाशील व्यक्ति को आस्तिक बना गया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

ऋषि दयानन्द संसार में व्याप्त अन्धकार, पाखण्ड, गुरुडम, कुरीतियों मूर्तिपूजा आदि को हटाना चाहते थे। उनका जगत् को सत्य मार्ग एव सत्य का दर्शन कराना उद्देश्य था। वे स्वयं सत्य के पुजारी थे। सत्य के लिए जिए और सत्य पर ही शहीद हो गये। वे जीवन भर जहर पीते रहे और संसार को अमृत बांटते रहे। उन्होंने देश, जाति, धर्म एवं मानव कल्याण के लिए अपमान, गालियां पत्थर सहे। उनका संसार को योगदान स्मरणीय है। उनका तप, त्याग बलिदान वन्दनीय है। उनका तप, त्यागपूर्ण जीवन पूजनीय है। सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता अर्थ-लोम, पद-लोभ नहीं आने दिया। यदि संसार के महापुरुषों को तुला के एक पलड़े पर रख दिया जाय और ऋषि को दूसरे पलड़े पर तो निश्चय ही पूर्णता-योगदान, दिव्यता, भव्यता, तप-त्याग, बलिदान आदि की दृष्टि से ऋषि का ही पलड़ा भारी होगा? ऐसा अपूर्व अपने समय का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष, जिस व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को मिले वह निश्चय ही भाग्यशाली है।

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर

अफ्रीकी देश कीनिया की राजधानी में प्रथम स्थापित आर्यसमाज नैरोबी की 121वीं और आर्य स्त्री समाज की 106वीं वर्षगांठ भव्य समारोहपूर्वक सम्पन्न

8 दिवसीय आयोजन में यज्ञ, भजन, प्रवचन, वृक्षारोपण, सांस्कृतिक कार्यक्रम रहे विशेष आकर्षण

कीनिया में 125 वर्षों की आर्य परम्परा को आगे बढ़ाए युवा पीढ़ी - विनय आर्य

121वें वार्षिकोत्सव से प्रेरणा लेकर हम आगे बढ़ेंगे - डॉ. राजेन्द्र कुमार सैनी, प्रधान आर्यसमाज नैरोबी

वर्तमान में गतिशील कालखंड सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद, ऐतिहासिक और आर्यजनों को गौरवान्वित करने वाला है। क्योंकि आज आर्य समाज एक नए युग की ओर आगे बढ़ रहा है। आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वां जयंती वर्ष और आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष को लेकर चारों ओर अत्यन्त उत्साह का वातावरण दृष्टि गोचर हो रहा है। भारत के कोने-कोने में और विदेशों में पिछले लम्बे समय से

भारत, अमेरिका, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के प्रतिनिधियों की रही गरिमामयी उपस्थिति

यज्ञ, योग, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण का एक प्रवाह चल रहा है। बड़े बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन और प्रचार-प्रसार तथा विस्तार के विविध कीर्ति स्तम्भ स्थापित हो रहे हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं के अनुरूप आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यताओं और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के विश्व स्तर पर अभियान चलाए जा रहे हैं।

- शेष पृष्ठ 4-5 एवं 7 पर

देववाणी-संस्कृत

देव यज्ञशील से प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं

वेद-स्वाध्याय

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्राय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः।।

-ऋ॰ 8/2/18; अथर्व॰ 20/18/3

ऋषिः- मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दःआष्रीगायत्री।।

शब्दार्थ - **देवाः** =देव लोग **सुन्वन्तम्** =यज्ञकर्म करते हुए की **इच्छन्ति**=इच्छा करते हैं। **न स्वप्राय स्पृहयन्ति**=निद्राशील, सुस्तों को नहीं चाहते। **अतन्द्राः** =स्वयं आलस्य-रहित ये देव लोग **प्रमादम्**= गलती, भूल करनेवाले का **यन्ति**=नियमन करते हैं।

विनय- आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो निम्न पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता, किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एवं, बहुत-से अत्यन्त लाभकारी कार्यों को शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वञ्चित हो जाते हैं, अतः आलस्य करनेवाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। या यूँ कहना चाहिए कि परमात्मा के देव आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार - यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं- इन द्वारा पूरा नियमन् अनुशासन (Discipline)चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध और पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है- बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि का द्वारा हमें शिक्षा मिलती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लङ्घन न करें। ये देव इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर-भूल-चूक से बिल्कुल रहित होकर-कर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस सत्त्वगुण के बने हुए हैं जोकि तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किये हुए हैं, अतः आलस्य-प्रमाद करनेवाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं? अतः देव उन्हें प्रमादों के लिए बार-बार दण्ड दे-देकर, उन्हें पुनः -पुनः ठोकरें मारते हुए जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगद्रूपी यज्ञ चला रहा रहे हैं उसी के अनुसार- उसकी अनुकूलता में जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ-कर्म ही है। मनुष्य को इस यथार्थ कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस के द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊँचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस प्रकार का कोई भी कर्म करना इस संसार-यज्ञ के लिए सोम-रस का सेवन करना है। तनिक देखो-इन देवों के प्यारे लोगों को देखो-जो अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम-रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्त्तव्य में सदा जागृत, कटिबद्ध, संनद्ध रहते हुए देव-तुल्य जीवन बिता रहे हैं।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हे वेदज्ञान के सूर्य! गरुदेव दयानन्द तुम्हें शत-शत नमन

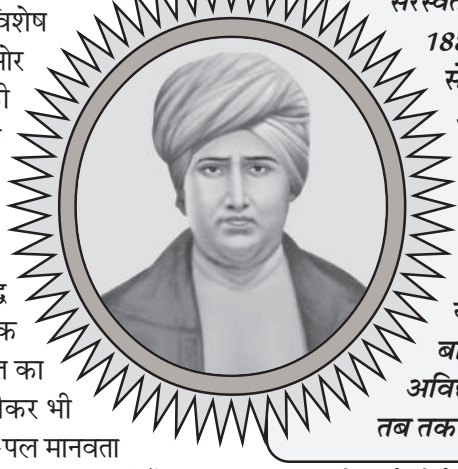

वह सूर्य कोई ओर नहीं 19वीं सदी के महामानव वेद ज्ञान के सूर्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी ही थे, वह उदास सांझ कोई ओर नहीं दीपावली, 30 अक्टूबर 1883, अजमेर की ही सांझ थी, महर्षि ने अपने हत्यारे को भारी मन से यही तो कहा था, कि अभी तो मेरा बहुत सा काम शेष है, और अंतिम विदाई लेते हुए, वे "अमर वाक्य- हे, ईश्वर तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो "महर्षि के अमर शिष्य जो उनकी प्रेरणा से दीपक की भांति प्रकाशित थे, उनमें चाहे स्वामी श्रद्धानंद हो, लाला लाजपत राय हो, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी हो, महात्मा हंसराज हो या फिर पंडित लेखराम जी हो, स्वामी दर्शनानंद हो या अन्य सभी महापुरुष जो आर्य समाज की अग्रिम पंक्ति में अपने बलिदान से, त्याग, तपस्या और साधना पूर्ण जीवन से अज्ञान, अविद्या और ढोंग, पाखंड तथा सामाजिक कुरीतियों के अंधकार से तब तक लड़ते रहे जब तक उनका प्रेरक जीवन शेष रहा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष हमारे सामने है। इस बीच उनका 141वां निर्वाण दिवस हम सब आर्यजनों के लिए विशेष रूप से उनके अधूरे कार्यों और सपनों को पूर्णता की ओर आगे बढ़ाने का संकल्प दिवस है। प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि दयानन्द जी ने संपूर्ण विश्व को असत्य से सत्य की ओर, अंधेरे से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की चलने का रास्ता दिखाया, लोकोपकारी महान कार्यों को करने के लिए कठिन तप त्याग-साधना की, ऐसे ऋषिवर का न समझ लोगों ने बार-बार अपमान किया, उनके विरुद्ध अनेकानेक षड़यंत्र रचे, ईट और पत्थर मारे, प्राण घातक प्रहार किए, उन्हें विषपान तक कराया, किन्तु गौरव इस बात का होता है कि सत्य और न्याय के पथ पर चलने वाले विष पीकर भी मानव समाज को अमृत पिलाने वाले, अपने जीवन का पल-पल मानवता को जीवंत करने के लिए समर्पित करने वाले ऋषिवर के हम अनुयाई हैं, एक ऐसे ऋषि के अनुयाई हैं जो कहता है कि विरोध की आंच से सत्य की कांति चौगुना चमकती है, दयानंद को यदि कोई तोप के मुंह के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है? तब भी उसके मुंह से से वेद की श्रुति ही निकलेगी। ऐसे सत्य पर दृढ़ संकल्पित ऋषि दयानंद का यह 141वां निर्वाण दिवस है।

19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जैसे जन्म, बोध, तप, त्याग, साधना, शिक्षा-दीक्षा, समाज सुधार, प्राचीन वैदिक ऋषि-मुनियों की परंपरा को पुनर्जीवित करना, ईश्वर की अमृतवाणी वेद ज्ञान का पुनुरुद्धार करना, सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथों का निर्माण करना, मानव कल्याण हेतु निरंतर संघर्ष करना, अपमान, तिरस्कार सहकर भी मानवजाति का उपकार करना, दर्जनों बार जहर पीकर भी अमृत पिलाना आदि अनगिनत लोकोपकार करना जितना कठिन कार्य था उससे भी अधिक असाधारण घटना थी महर्षि का निर्वाण। एक खामोशी और उदासी छाने लगी, किसी ने पूछा अस्ताचल की ओर जाते सूर्य से, हे सूर्यदेव! आपने प्रभात में अपनी सुनहरी किरणों से धरा पर छाए हुए घने अंधेरे को मिटाया, अपने प्रकाश ओर प्रताप से सभी जीव जंतुओं को, संपूर्ण प्रकृति को जीवंत किया, आलस्य और अकर्मण्यता से घिरे मानवमात्र को कर्मपथ पर आरूढ़ किया, लेकिन अब जब सांझ होने लगी है तो इस उदासी और खामोशी का क्या कारण?

सूर्य ने मुस्कराते हुए, अपनी असहनीय पीड़ा को अपने ही भीतर समेटते हुए कहा, माना कि मैंने अंधेरों को दूर भगाया, मानवमात्र को सिर उठाकर जीना सिखाया, सबका स्वयं का स्वयं से परिचय कराया, प्राणीमात्र के प्रति मानवजाति को कर्तव्य का बोध कराया, किंतु मेरे अस्ताचल की ओर जाने पर फिर से धरा पर अंधेरा न छा जाए ये थोड़ी उदासी उसी का परिणाम है। उस समय कुछ प्रज्ज्वलित दीपकों ने आवाज देकर कहा , संकल्प धारण करते हुए कहा कि हे सूर्यदेव! हम जानते हैं कि हमारे भीतर जो प्रकाश है, वह तेरा ही दिया हुआ है, ये बाती, ये तेल सब तेरी ही देन है, हमारी सामर्थ्य, शक्ति तेरे सामान तो नहीं है, किंतु जब तक हमारे भीतर तेरे प्रकाश की किरण जगमगाती रहेगी, जब तक तेरी प्रेरणा से हम जीवित रहेंगे तब तक धरा पर अंधेरों से लड़ा-लड़ते रहेंगे, धरती पर अंधेरों को पसरने नहीं देंगे, हम स्वयं जलते रहेंगे, पर तेरी प्रदत्त किरणों से धरा को प्रकाशित करते रहेंगे

ये सूर्य कोई ओर नहीं 19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानंद सरस्वती जी ही थे, वह उदास सांझ कोई ओर नहीं दीपावली, 30 अक्टूबर 1883, अजमेर की ही सांझ थी, महर्षि ने अपने हत्यारे को भारी मन से यही तो कहा था, कि अभी तो मेरा बहुत सा काम शेष है, और अंतिम विदाई लेते हुए, वे "अमर वाक्य हे, ईश्वर तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो "महर्षि के अमर शिष्य जो उनकी प्रेरणा से दीपक की भांति प्रकाशित थे, उनमें चाहे स्वामी श्रद्धानंद हो, लाला लाजपत राय हो, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी हो, महात्मा हंसराज हो या फिर पंडित लेखराम जी हो, स्वामी दर्शनानंद हो या अन्य सभी महापुरुष जो आर्य समाज की अग्रिम पंक्ति में अपने बलिदान से, त्याग, तपस्या और साधना पूर्ण जीवन से अज्ञान, अविद्या और ढोंग, पाखंड तथा सामाजिक कुरीतियों के अंधकार से तब तक लड़ते रहे जब तक उनका प्रेरक जीवन शेष रहा।

वेदों के मर्मज्ञ महान विद्वान, त्यागी, तपस्वी, धर्म धुरंधर, महान ईश्वर भक्त, संन्यासी, वैदिक ज्ञान से सूर्य की भांति संपूर्ण मानवजाति को सुपथ दिखाने वाले महर्षि ने सैकड़ों बुझे हुए दीपकों को प्रज्ज्वलित कर अंधेरों के बीच जगमगाना सिखाया, फिर सैकड़ों प्रज्ज्वलित दीपकों से हजारों दीप रोशन हुए, हजारों से लाखों और आज करोड़ों दीप ज्योतित होकर विश्व धरा को निरन्तर सन्मार्ग दिखा रहे हैं।

एक अकेले महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने वैदिक ज्ञान की अनुपम किरणों से लाखों, करोड़ों दीपक प्रज्ज्वलित कर दिए, लेकिन हम करोड़ों दीपक मिलकर भी महर्षि दयानंद के समान एक ज्ञान का सूर्य निर्मित नहीं कर सकते।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक अमावस्या पर देश और दुनिया में दीपावली होगी, घर-घर दीए जलेंगे, रोशनी होगी, मिठाइयां बटेंगी और उपहार भी, बम- पटाखे और फुलझडियां भी चलेंगी, किंतु क्या भय-भ्रम के अंधेरों का तिरोहण अब तक संभव हुआ है या इस बार होगा?

बाहर के अंधेरे से अंदर का अंधेरा खतरनाक होता है, बाहर की कृत्रिमता के प्रकाश से भीतर की चांदनी नहीं होती, इसलिए बार-बार दीपावाली आती है, फिर भी अंधेरा नहीं हटता। ऋषिवर का निर्वाण हुए 141 वर्ष हो चुके हैं, उन्होंने सदैव वैदिक ज्ञान के उजाले पर जोर दिया, भय-भ्रम-पाखंड, अंधविश्वास कुरीतियों से समाज को बचाने का महान कार्य किया, उन्होंने मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा दी, यूं तो ऋषि

- जारी पृष्ठ 7 पर

केन्या: नैरोबी आर्य समाज जो मैंने देखा वो अविस्मरणीय रहेगा - विनय आर्य

..... यह सब उस देश और भूमि पर हो रहा था जहाँ की आबादी का लगभग 85 प्रतिशत ईसाई मत तथा 10 प्रतिशत हिस्सा मुस्लिम मत का पालन करता है। उस देश में भी कह सकते हैं जहाँ मात्र हजारों की संख्या में भारतीय रहते हैं। वो भारतीय मूल के लोग जिनके पूर्वजों ने परिस्थितिवश भारत तो छोड़ा किन्तु अपना वैदिक धर्म और उससे जुड़ी परंपराएँ नहीं छोड़ीं। बल्कि गर्व के ओ३म ध्वज की पताका को अफ्रीकी भूमि पर फहराए रखा।

भले ही यह आर्य समाज नैरोबी का 121वां स्थापना दिवस था, किन्तु वहां जाकर जब इतिहास को देखा, तो अनुभव हुआ कि महर्षि दयानंद जी के भक्तों ने कितने कम साधनों में यहाँ आर्य समाज और वैदिक धर्म की नींव रखी।.....

अगर आप मन से चाहें तो दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं है, किसी का विश्वास ही उसके जीवन का आधार है। जीवन का यह मूलमंत्र हाल ही में अपनी आँखों से पूर्वी अफ्रीकी देश केन्या से देखकर लौटा हूँ। दरअसल, केन्या की राजधानी नैरोबी में महर्षि दयानंद जी के 200वें जन्मदिवस के कार्यक्रम की श्रृंखला के अवसर पर आर्य समाज नैरोबी का 121वां स्थापना दिवस एवं आर्य स्त्री समाज का 106वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। भारत से पांच हजार आठ सौ किलोमीटर दूर अफ्रीकी भूमि पर गूंजते वेदमंत्र बड़ी संख्या में आहुति डालते लोगों के बीच दैनिक यज्ञ में उपस्थित रहना गौरवान्वित पल रहा।

यह सब उस देश और भूमि पर हो रहा था जहाँ की आबादी का लगभग 85 प्रतिशत ईसाई मत तथा 10 प्रतिशत हिस्सा मुस्लिम मत का पालन करता है। उस देश में भी कह सकते हैं जहाँ मात्र हजारों की संख्या में भारतीय रहते हैं। वो भारतीय मूल के लोग जिनके पुरखों ने परिस्थितिवश भारत तो छोड़ा किन्तु अपना वैदिक धर्म और उससे जुड़ी परंपराएँ नहीं छोड़ीं। बल्कि गर्व के ओ३म ध्वज की पताका को अफ्रीकी भूमि पर फहराए रखा।

भले ही यह आर्य समाज नैरोबी का 121वां स्थापना दिवस था, किन्तु वहां जाकर जब इतिहास को देखा, तो अहसास हुआ कि महर्षि दयानंद जी के भक्तों ने कितने कम साधनों में यहाँ आर्य समाज और वैदिक धर्म की नींव रखी। क्योंकि यहाँ जाने के बाद उस स्थान पर यज्ञ करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जहाँ हमारे आर्य समाज के पूर्वजों ने अफ्रीकी भूमि पर पहला यज्ञ किया था। इसका इतिहास सुनकर मैं अचंभित रह गया, कारण इस स्थान का नाम है मैन ईटर्स, यानी इंसानों का खाने वाला। दरअसल, मार्च 1898 में किलिन्दिनी हार्बर पर युगांडा को हिंद महासागर से जोड़ने वाले रेलवे के निर्माण के हिस्से के रूप में, अंग्रेजों ने केन्या में त्सावो नदी पर एक रेलवे पुल का निर्माण शुरू किया। रेलवे पर काम करने के लिए 20,000 से ज़्यादा श्रमिक और इंजीनियर भारत से गए थे। लेकिन पुल निर्माण के दौरान एक-एक कर वे गायब होने लगे। निर्माण के अगले नौ महीनों के दौरान, शेर रात में श्रमिकों को उनके टेंट से खींच ले जाते और उन्हें खा जाते। कर्मचारियों ने शेरों को डराने की कोशिश की और नरभक्षियों को दूर रखने के लिए अपने शिविर के चारों ओर काँटेदार बाड़ बनाए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ (शेर काँटेदार बाड़ों को लांघकर या रेंगकर शिविरों में घुस जाते और उन्हें खींचकर एक गुफा में ले जाकर खा जाते। जैसे-जैसे हमले बढ़ते गए, सैकड़ों कर्मचारी त्सावो से भाग गए, जिससे पुल पर निर्माण कार्य रुक गया। आखिरकार, लेफ्टिनेंट-कर्नल जॉन हेनरी पैटरसन ने मोर्चा संभाला और भारतीय लोगों की मदद से उन शेरों को मार गिराया।

शेरों द्वारा मारे गए लोगों की सही संख्या स्पष्ट नहीं है। पैटरसन ने कई आंकड़े दिए, जिसमें दावा किया कि कुल 135 लोग मारे गए। शेरों के मारे जाने के बाद अफ्रीकी ईसाइयों और यूरोपीय अधिकारियों ने जहाँ अपनी मौन प्रार्थना की और सो गए। वहां केन्या देश के इस भयानक जंगल में आर्य समाज से जुड़े हमारे महानुभावों, जिसमें लालचंद शर्मा, महाशय बद्रीनाथ आर्य, मथुरा दास कपिला, इंदर सिंह केंट, बैसाखी राम भारद्वाज और फकीर चंद समेत अन्य महानुभावों की हवन करने की बड़ी इच्छा हुई । इसलिए, उन्होंने जमीन में एक चौकोर गड्ढा खोदकर हवन कुंड बनाया और उसमें जंगल से चुनकर सूखी लकड़ियाँ भर दीं। रसोई के घी और सूखे जंगली फूलों की सामग्री लेकर कुछ पवित्र अग्नि के चारों ओर एकत्रित हुए और हवन किया।

126 साल पहले यह हवन पूर्वी अफ्रीका और पूरे अफ्रीका की धरती पर किया गया पहला हवन था और यही वह समय था जब केन्या में हमारे आर्य समाज के आंदोलन के बीज बोए गए थे - एक ऐसा क्षण जिसने एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आंदोलन की नींव रखी जो एक सदी से भी अधिक समय से फल-फूल रहा है।

आज 126 साल बाद ठीक उस स्थान पर यज्ञ करना मेरे लिए गर्व और गौरव का पल था, जिसे मैं शब्दों में चाहकर भी व्यक्त नहीं कर सकता। सोचिए, आज 126 साल बाद जब मैं उसे गुफा के करीब पहुंचा, तो मन से धड़कन होने लगी। न जाने उस गुफा के अंदर कितने स्वामी दयानंद जी के शिष्यों ने अपने प्राणों को खोया होगा। 1901 में रेलवे के पूरा होने के बाद, हमारे आर्य समाज के पूर्वजों ने स्वामी दयानंद जी के विचारों का प्रचार शुरू किया और 5 जुलाई 1903 को आर्य समाज नैरोबी की स्थापना की गई । स्वामी जी प्रति मन में आस्था तो देखिए कि स्थापना करने के लिए को भवन नहीं था, तो 5 जुलाई 1903 कोई नैरोबी में भारत से गए जय गोपाल जी के घर पर 45 लोगों ने भाग लिया। कारण यह था कि आर्य समाज नैरोबी के पास कोई भवन नहीं था। इसलिए, साप्ताहिक सत्संग और बैठकें सदस्यों के निवास पर ही आयोजित की जाती थीं। इसके बाद आवश्यकता महसूस हुई और आर्य समाज नैरोबी की स्थापना की या कहो, अफ्रीकी भूमि पर स्वामी दयानंद जी के संदेशों की नींव रखी। आर्य समाज के सदस्यों की बढ़ती संख्या के कारण जब सदस्यों के निवास पर बैठकें आयोजित करना कठिन हो गया, तो अंतरंग सभा की बैठक में आर्य समाज के लिए भवन निर्माण हेतु एक एकड़ भूमि खरीदने का निर्णय लिया गया।

5 जुलाई को विचार किया और 11 सितंबर 1903 को ही पूर्वी अफ्रीका में पहली आर्य समाज इमारत की नींव रखी गई। आज इस जगह पर सात मंजिला इमारत है जो वैदिक हाउस के नाम से जानी जाती है। केवल नैरोबी ही नहीं, इस शहर से 483 किलोमीटर दूर, इसके अगले साल 1904 में केन्या के दूसरे सबसे बड़े शहर मोम्बासा में आर्य समाज की स्थापना की गई । एक मंदिर बनाया, एक युवा शाखा की स्थापना की, साप्ताहिक हवन और सत्संग का आयोजन किया जाने लगा, साथ ही वहां एक नर्सरी और एक स्कूल बनाया गया और एक आर्यन क्लब स्थापित किया गया। साथ ही पूर्वी अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा बनाकर वेद का संदेश देने का कार्य आरंभ किया। इनमें श्री इंदर सिंह केंट- अध्यक्ष, श्री किशन चंद उपाध्यक्ष, श्री बद्री नाथ जी आर्य सचिव, श्री अमर नाथ- सह सचिव, श्री जल गोपाल- कोषाध्यक्ष, श्री लक्ष्मण दास- पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री मूल चंद- सदस्य, श्री मथुरा दास कपिला- सदस्य, श्री राम रतन- सदस्य बने। पूर्वी अफ्रीका के आर्य बंधु उन दिनों उसी प्रकार बहुत उत्साही थे, जिस प्रकार उत्तर भारत के थे। प्रत्येक आर्य सदस्य वैदिक धर्म का प्रचारक था तथा आर्य समाज के लिए कुछ भी करने को तैयार था। लेकिन उनका मार्ग बाधाओं से मुक्त नहीं था। नैरोबी में मुसलमानों की संख्या पर्याप्त थी। उनका संगठन अंजुमन-ए-इस्लाम आर्य समाज की स्थापना को बर्दाश्त नहीं कर सका तथा उसके सदस्यों ने खुली बैठकों में आर्य समाज पर आरोप लगाए। इससे विचलित हुए बिना श्री सालिग राम शर्मा तथा श्री बिहारी लाल ने उनके आरोपों का मुंहतोड़ जवाब दिया। परिणामस्वरूप अंजुमन-ए-इस्लाम अप्रभावी हो गया तथा आर्य समाज का ध्वज गर्व से फहरा उठा।

आज नैरोबी में एक सुन्दर स्थान पार्कलैंड में आर्य समाज नैरोबी का भवन है। इस भवन में नानजी भाई कालिदास मेहता जी की प्रतिमा स्थापित है। इसका इतिहास भी अपने आप में गर्व करने वाला है। दरअसल, नानजी भाई कालिदास ने आर्य समाज के लिए जो भी किया, वह अपने आप में एक अमूल्य योगदान और इतिहास है। इस कड़ी में देखा जाए, उनका केन्या के अंदर भी एक बहुत बड़ा योगदान रहा। क्योंकि जिस पार्कलैंड में आज आर्य समाज नैरोबी का विशाल भवन है, यह छह एकड़ भूमि श्री नानजी कालिदास मेहता जी के पास थी, जो उन्होंने आर्य समाज के लिए दान की थी। साथ ही, छह हजार केन्या की मुद्रा शिलिंग भी दान किए थे। बाद में, श्री नानजी भा कालिदास मेहता ने दस हजार शिलिंग का दान कर तथा जनता से एकत्रित कुछ और धन से एक बड़ा हॉल बनवाया गया और लगभग तीन एकड़ भूमि पुनः खरीदी गई । पार्कलैंड आर्य हाईस्कूल स्वामी श्रद्धानंद जी के नाम से श्रद्धानंद आर्य नर्सरी स्कूल चलाया जा रहा है। नानजी भाई महर्षि दयानंद जी के कट्टर अनुयायी और वैदिक सिद्धांतों के समर्थक थे। वे जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने यह साबित कर दिया, जब उन्होंने आर्य कन्या के भूमि पूजन के लिए अछूत जाति की एक लड़की को आमंत्रित किया।

आर्य समाज मंदिर नैरोबी से कुछ दूरी पर साल 1949 में स्थापित आर्य कन्या स्कूल की स्थापना की गई तथा आर्य वैदिक एकेडमी स्कूल भी बनाया गया। आज भी इन सब स्कूलों में हजारों की संख्या में भारतीय और अफ्रीकी बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। न केवल शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं बल्कि स्कूलों में बच्चे वहां की शिक्षा के साथ-साथ वैदिक शिक्षा भी ग्रहण कर रहे हैं।

निसंदेह आर्य समाज नैरोबी का यह 121वां स्थापना दिवस का कार्यक्रम सफलता के साथ पूर्ण हुआ, किंतु इतना कह सकता हूँ कि आरंभ में वहां जाकर आर्यजनों ने जो कष्ट झेले और जो समय पीड़ा में बिताया, वह उसे मिलने वाले महान गौरव को आज देखकर मन गर्व से भर उठा। अंत में इतना जरूर कहूँगा कि आर्य समाज नैरोबी के प्रधान डॉ. राजेन्द्र कुमार सैनी जी समेत आर्य समाज नैरोबी के सभी कार्यकर्ताओं को सफल कार्यक्रम के लिए हृदय से बधाई और शुभकामनाएं। निश्चित ही केन्या में आर्य समाज के कार्यक्रम में जो मैंने देखा, वह अविस्मरणीय रहेगा।

- महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सदस्य, सार्वदेशिक सभा कोर कमेटी

प्रथम पृष्ठ का शेष

ब्रिटिश उपनिवेश कीनिया का त्वासो रलवे स्टेशन जहां 126वर्ष पूर्व प्रथम बार यज्ञाग्नि प्रज्ज्वलित की गई थी, वहां ध्वजारोहण एवं वृक्षारोपण करते अधिकारीगण

आर्यसमाज नैरोबी एवं आर्य स्त्री समाज के वार्षिकोत्सव 5 से 13 अक्तूबर तक प्रतिदिन हुआ 51 कुण्डीय यज्ञों का आयोजन : हर रोज नए याज्ञिकों ने दी आहुतियां

वार्षिकोत्सव पर सम्बोधन देते आर्यसमाज नैरोबी के प्रधान डॉ. राजेन्द्र कुमार सैनी, मंचस्थ हैं श्री भुवनेश खोसला, स्वामी वेदानन्द सरस्वती एवं, विनय आर्य एवं अन्य महानुभाव।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नैरोबी आर्यसमाज एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान करते श्री विनय आर्य जी, श्री भुवनेश खोसला जी एवं श्री मनीष भाटिया जी एवं इस अवसर पर उपस्थित आर्यजनों से भरा हॉल।

दुबई स्थित आचार्यकुलम द्वारा महासरस्वती यज्ञ एवं वेद प्रचार समारोहपूर्वक सम्पन्न

केरल स्थित कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष आचार्य एम.आर. राजेश जी की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम

वैदिक विद्वान और कश्यपाश्रम के कुलपति आचार्यश्री राजेश की अध्यक्षता में आचार्यकुलम दुबई के तत्वावधान में, इस वर्ष का महासरस्वती यज्ञ और विद्यारंभ, पर्ल विजडम स्कूल, दुबई में हुआ। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सत्यार्थ प्रकाश और उनके वेद संदेश से प्रेरित हो के जिस दिशा से आचार्याश्री राजेश जी वेद प्रचार कर रहे है वह अब केरल से दुबई तक पहुँच गया है। सुबह 7 बजे महासरस्वती मंडपम में अग्नि प्रज्ज्वलन के साथ मंत्र दीक्षा समारोह शुरू हुआ। हजारों की संख्या में उपस्थित समारोह में आचार्यश्री राजेश ने करीब दो सौ बच्चों को प्रारंभिक मंत्र दीक्षा दी। आचार्यश्री का अमूल्यवेद, चतुर्वेदों के मंत्रों का संग्रह – 'मंत्रवेद' – को उनके सैकड़ों शिष्यों ने स्वीकार किया। तत्पश्चात् आचार्यकुलम के विद्यार्थियों के लिए प्रणव एवं गायत्रीयज्ञ मन्त्र दीक्षा समारोह भी सम्पन्न हुआ।

महासरस्वती यज्ञ के संयोजन में दुबई स्थित आचार्यकुलम द्वारा स्मारक-सरस्वतीम 2024 का विमोचन करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि मैं तो सिर्फ एक प्रचारक हूँ जो ऋषि दयानंद का वेदों से प्रति प्रेम को फैलाने आया हूँ। मेधासूक्तम, वैदिक सरस्वती मंत्र, वेद सरस्वती सूक्त का पाठ करके महा सरस्वती यज्ञ संपूर्ण हुआ। यह सब UAE के विभिन्न प्रांतों से आए प्रवासी समुदाय के लिए एक महान अनुभव बन गया।

आर्य समाज गंज सीहोर मध्य प्रदेश में वेद प्रचार महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज गंज सीहोर मध्यप्रदेश द्वारा आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी के ब्रह्मत्व में छः दिवसीय वेद प्रचार महोत्सव 'संपन्न हुआ। इस अवसर पर '26 वेदियों पर 102 यजमान दंपतियों यज्ञ में आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की। आचार्य जी ने शताधिक यजमानों को संबोधित करते हुए स्तुति, प्रार्थना,उपासना की बड़ी मार्मिक व्याख्या की। जब हम किसी वस्तु के गुणों को कहते हैं, तो उसकी स्तुति करते हैं जब हम उस गुण को अपने लिए मांगते हैं तो उसे प्रार्थना कहते हैं और जब वह हमें प्राप्त हो जाता है तो उसे उपासना कहते हैं। आज प्रार्थना उपासना के सही अर्थ को ना जानने के कारण बहुत बड़ा वर्ग धार्मिक होकर भी जैसे नास्तिक सा हो गया है, महर्षि दयानंद जी महाराज के सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ में इसकी बड़ी स्पष्ट व्याख्या की गई है। वेदों के आविर्भाव को बताते हुए आपने 16 संस्कारों को विस्तार से समझाया।

आचार्य जी ने बड़ी संख्या में आए हुए यजमान दंपतियों से संकल्प करवाया कि वे प्रतिदिन संध्या उपासना ध्यान करेंगे और अपनी संतानों को संस्कारित करेंगे अपने घर में अग्निहोत्र और वेदों का स्वाध्याय करेंगे, महीने में कम से कम एक बार आर्य समाज वैदिक धर्म के सत्संग में अवश्य जाएंगे। इसके अतिरिक्त यजमानों से उनके दुर्गुण दुर्व्यसन जैसे तंबाकू, बीड़ी- सिगरेट, शराब, गांजा, भांग, मांसाहार, आदि छोडने का भी आग्रह किया गया। 27 अगस्त से प्रतिदिन दोनों समय नवनिर्मित आर्य समाज मंदिर आचार्य

– *जारी पृष्ठ 7 पर*

आर्यसमाज नैरोबी की 121वीं और आर्य स्त्री समाज की 106वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

साप्ताहिक स्वाध्याय

नियमों की दृढ़ नींव

गतांक से आगे-

पंजाब के दौरे की कुछेक घटनाएं महर्षि दयानन्द के चरित्र का अच्छा चित्रण करती हैं। जब वह अमृतसर में उपदेश कर रहे थे, उन दिनों पादरी क्लार्क उनके पास आए। पादरी साहब ने महर्षि जी को एक ही मेज पर इकट्ठे भोजन करने के लिए निमंत्रित किया। महर्षि जी ने पूछा कि इकट्ठे भोजन करने से क्या लाभ होगा? पादरी महाशय बोले कि इकट्ठे खाने से प्रीति बढ़ जायगी। इस पर महर्षि जी ने कहा-'शीआ और सुन्नी एक ही बर्तन में खाते हैं। रूसी और अंग्रेज तथा इसी तरह आप रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट ईसाई एक ही मेज पर जीम लेते हैं, परन्तु सब जानते हैं कि इनमें परस्पर कितना वैर-विरोध ा है, एक-दूसरे के साथ कितनी शत्रुता है!' सरदार दयालसिंह मजीठिया अमृतसर के प्रसिद्ध रईस थे। वह ब्राह्मो थे। वह प्राय: वेदों पर शंकाएं किया करते थे। बातचीत करने में वह प्राय: आपे से बाहर हो जाते और किसी नियम का पालन नहीं करते थे। एक बार बातचीत में वह बहुत तेज हो गए। महर्षि जी ने उन्हें बार-बार समझाया कि आप निश्चित समय तक बोला कीजिए, प्रतिवादी को बोलने का मौका भी दीजिये। तब भी सरदार साहब शान्त न हुए। तब महर्षि जी ने कहा कि यदि आप निर्णय ही कराना चाहते हैं तो केशवचन्द्र जी को बुलाकर बातचीत करा लीजिए।

गुरुदासपुर में महर्षि दयानन्द के व्याख्यान सुनने इंजीनियर मिस्टर कॉक भी आया करते थे। एक दिन व्याख्यान देते हुए आपने कहा-'अंग्रेज लोगों को इस देश में आए बहुत चिड़ हो गया है, परन्तु इन लोगों ने अपने उच्चारण को अभी तक नहीं सुधारा। तकार के स्थान में टकार ही बोलते हैं।' कॉक महाशय रुष्ट हो गए और यह कहते हुए चले गए कि यदि तुम पश्चिम में पेशावर की ओर चले जाओ तो तुम्हें मजा आ जाए। कॉक महाशय का अभिप्राय शायद यह था कि स्वतंत्रता से बोलना केवल अंग्रेजी राज्य में ही सम्भव है। ऐसा तर्क प्राय: किया जाता है, परन्तु तर्क करने वाले लोग भूल जाते हैं कि अंग्रेजी राज्य से पूर्व भी भारतवर्ष में स्वाधीन क्रिया के लिए बहुत अधिक रास्ते खुले थे। पहले तो अंग्रेजी राज्य में वाणी की स्वाधीनता बहुत परिमित है, और फिर कौन कह सकता है कि वाणी की थोड़ी-सी स्वाधीनता शिक्षा, हथियार और राजकीय स्वाधीनता से बहुत श्रेष्ठ है? जालन्धर में महर्षि दयानन्द सरदार विक्रमसिंह के यहां ठहरे हुए थे। सरदार जी ने महर्षि जी से ब्रह्मचर्य के बल की बात पूछी। महर्षि जी ने बतलाया कि ब्रह्मचर्य से अतुल बल की प्राप्ति हो सकती है। सरदार साहब को विश्वास न हुआ और सबूत मांगने लगे। महर्षि जी उस समय तो चुप रहे। सांझ के समय सरदार साहब अपनी गाड़ी में बैठकर बाहर चले। गाड़ी में घोड़ों की बड़ी बढ़िया जोड़ी जुती हुई थी। कोचवान ने लगाम संभाली और चाबुक हिलाया। जो घोड़ों की जोड़ी इशारा पाते ही हवा से बातें करने लगती थी, वह केवल अगले पांव उठाकर रह गई। कोचवान झुंझला गया। सरदार साहब आश्चर्य से इधर-उधर देने लगे। पीछे दृष्टि पड़ी तो देखा कि महर्षि जी गाड़ी को पकड़कर मुस्करा रहे हैं। सरदार साहब को ब्रह्मचर्य के बल का एक नमूना मिल गया और महर्षि जी ने हंसकर गाड़ी को छोड़ दिया।

पंजाब में भ्रमण के समय महर्षि दयानन्द वेदभाष्य लिखाया करते थे, इस कारण उनके साथ दो-तीन पण्डित रहते थे। पत्र-व्यवहार के लिए लेखक रहता था। आप प्राय: 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में क्रम से दिये लक्षणों में से एक-एक को लेकर उसकी व्याख्या करते थे। सब व्याख्यान शास्त्रीय होते थे। शास्त्रीय विषय के प्रसंग में प्रचलित सामयिक बुराइयों का खण्डन करते जाते थे। धार्मिक, सामाजिक या राजनैतिक सभी प्रकार के दोषों की मीमांसा हो जाती थी। सभी प्रकार की बुराइयों पर सुदर्शन चक्र घूम जाता था। किसी भी जीवित शक्ति का लिहाज नहीं किया जाता था। महर्षि की दृष्टि में दो ही वस्तुएं थीं- एक सत्य, दूसरी असत्य। सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन, यह उनका धर्म था। यहां न प्रजा का लिहाज

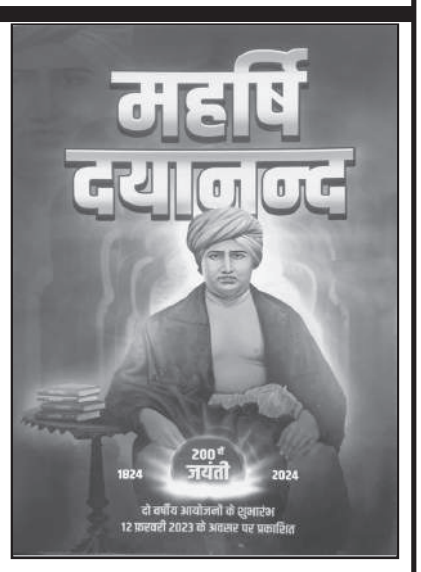

था, न राजा का भय था। संसार की हर प्रकार की भलाई करना उनका लक्ष्य था। अपने निवास स्थान पर महर्षि जी साधरण वेष में रहते थे, परन्तु व्याख्यान के समय सिर पर रेशमी पीताम्बर, नीचे पीली रेशमी धेती, और ऊपर ऊनी चोगा पहनते थे। शरीर सुडौल और लम्बा था। चेहरा पूर्ण चन्द्र के समान भरा हुआ और तेजस्वी था। आंखों से तेज बरसता था। वह प्रभावयुक्त मूर्ति थी, जिसने थोड़े ही दिनों में पंजाब भर में धर्मिक हलचल पैदा कर दी, और भ्रमात्मक विचारों का महल हिला दिया।

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Solid foundation of rules

The members sought Swamiji's opinion on the subject presented. The sage said 'I am not a member of your intimate meeting, so I do not have the right to give advice.' Swami ji was unanimously made a respected member of the intimate meeting at the same time. When the bye-laws were drawn up, the organization of the local society was complete. Conventions started being held regularly in the Samaj Mandir.

In this way, being sure of the work of Lahore, the sage started touring the province. He gave good sermons by visiting Amritsar, Gurudassur, Jalan-dhar, Ferozepur Cantonment, Rawalpindi, Gujarat, Wazira-bad, Gujranwala and Multan Cantonment etc. Often the Arya Samaj was established as soon as you arrived. With the establishment of Arya samaj, there used to be a stir in the mythological stronghold and also in the clergy. At all places, one had to fight with the Puranics here and the priests there. The mytho-logical party of Punjab was completely devoid of Pandits. There was no good scholar in the entire province. Not to speak of the knowledge of Vedas, it was difficult to find a good connoisseur of Arvachina too. This was the reason that in Punjab, there used to be more rudeness on the part of the mythical party. They wanted to fill the place of learning with abuses and bricks and stones. In cities like Amritsar and Wazirabad, the use of pebbles in place of abuses and evidence of books in place of lectures or debates was widely understood. There were fewer scriptures with the priests, but Rishi Dayanand saved many innocent quails trapped in their clutches.

Some incidents of the tour of Punjab give a good picture of the character of Rishi Dayanand. Pastor Clarke came to him during those days when he was preaching in Amritsar. Pastor invited Swami ji to have food together at the same table. Swamiji asked ''What would be the benefit of eating food together?'' The priest said that love will increase by eating 'together'. On this Swamiji said-

'Shia and Sunni cook in the same pot. Russians and Englishmen and so you Roman Catholics and Protestant Christians eat at the same table, but everyone knows how much antagonism they have, how much enmity they have with each other!'

Sardar Dayal Singh Majithia was a famous noble man of Amritsar. He was Brahmo. He often used to doubt the Vedas. He often lost his temper in conversation and did not follow any rules. Once in a conversation he became very loud. Swami ji repeatedly explained to him that You should speak for a fixed time, also give a chance to the defendant to speak. Even then Sardar Sahib did not calm down. Then Swami ji said ''if he want to take a decision, then call Keshav chandra ji and have a conversation.'' Engineer Mr. Cock also used to come to Gurdaspur to listen to the lectures of Rishi Dayanand. While giving a lecture one day you said-

It has been a long time since the English people came to this country, but these people have not yet corrected their pronunciation. In place of takar, takar is spoken. Mr. Cock got angry and went on saying that if you go west towards Peshawar, you will enjoy. Mr. Cock probably meant that speaking freely was possible only in the English state. This argument is often made, but the people who argue forget that even before the British rule, there were many avenues for independent action in India. Firstly, the freedom of speech in the English state is very limited, and then who can say that a little freedom of speech is much better than education, arms and political freedom?

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" republished on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

दीपावली और दयानन्द...

उस युगपुरुष की विचारधारा, सिद्धान्तों, मान्यताओं व आदर्शों का उत्तराधिकारी आर्य समाज है। उन्होंने जो कुछ भी कहना और देना था, वह आर्य समाज के माध्यम से कह दिया व दे दिया है। यदि आर्य समाज ऋषि के मूल्यों व आदर्शों को लेकर आगे बढ़ता है, तो उनका यश, महत्व योगदान व श्रद्धा बढ़ती है। यदि आर्य समाज अपने गुरु के मन्तव्यों, सिद्धान्तों और आदर्शों से गिरता है तो उस महापुरुष का अपयश, अश्रद्धा और अपमान होता है। यह आत्म चिन्तन व विश्लेषण सभी ऋषि भक्तों, आर्य समाज और उससे सम्बन्धित सभी संस्थाओं, संगठनों, स्कूलों, आश्रमों आदि को ईमानदारी से करना चाहिए? हम ऋषि के नाम तथा कार्य को अपने गुण कर्म स्वभाव से बढ़ा रहे हैं या घटा रहे हैं?

दीवाली का पर्व हम सबको आत्म चिन्तन एवं आत्म निरीक्षण का सन्देश देता है, इस पर्व से देवात्मा दयानन्द के निर्वाण का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। यह पर्व अन्धकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक भी है। बाहर रोशनी बढ़ती जा रही है। अन्दर अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड, विषय-वासना, असन्तोष, ईष्या द्वेष आदि का अन्धेरा छाता जा रहा है। जीवन में अशान्ति, असन्तोष, चिंता, तनाव एवं रोग बढ़ते जा रहे हैं। जीवन भटकाव व बिखराव में गुज़रा जा रहा है? जितना जीवन व जगत् को व्यवस्थित करना चाहता हूं, उतना अव्यवस्थित होता जा रहा है? यदि तटस्थता से विचार करें, तो इस सबके मूल में अज्ञान ही कारण मिलेगा? इसी अज्ञान रूप अन्धकार से हटाने का सन्देश लेकर प्रति वर्ष आती है दीवाली। किन्तु हम मूल को भूल गए। दीवाली खान पान, मेले, धूम-धड़ाके में ही गुज़ार देते हैं। जहां प्रकाश है, वहां जीवन है। इसीलिए हमारे देश की प्रार्थनाओं में दुर्गण दुर्व्यसन, दु:खों और अज्ञान को मिटाने पर बल दिया।

असतो मा सद्गमय, तमसोमा-
ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ऋषि दयानन्द संसार में व्याप्त अन्धकार, पाखण्ड, गुरुडम, कुरीतियों मूर्तिपूजा आदि को हटाना चाहते थे। उनका जगत् को सत्य मार्ग एव सत्य का दर्शन

पृष्ठ 5 का शेष

श्री के मुखारविंद से वेदमंत्रों के सहाय से वेद कथा की अमृत वर्षा होती थी। बिजनौर के श्री भीष्म आर्य जी के भजन होते थे। पूर्णाहुति 1 सितंबर को प्रात: 8 बजे से ही सुदूर अंचलों से आर्यों का ज्ञान आगमन प्रारंभ हो गया था धीरे-धीरे राठौर धर्मशाला का जो प्रथम मंजिल का हाल था वह खचाखच भर गया था। आचार्य जी ने समाज राष्ट्र की सुख शान्ति के लिये आहुतियां दिलवाई। कार्यक्रम के अंत में आर्य समाज के मंत्री रितेश राठौर जी ने कहा कि आचार्य जी ने हमारे उत्साह को बढ़ाया जिसके कारण हम इतनी बड़ी संख्या में यजमानों को आमंत्रित कर सके।

- नरेश राठौर, प्रधान

प्रथम पृष्ठ का शेष

अफ्रीकी देश कीनिया की राजधानी ...

विश्व भर में होने वाले वृहद आयोजनों की श्रृंखला में अफ्रीकी महाद्वीप के विख्यात देश केन्या की राजधानी नैरोबी में 5 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 2024 तक आर्य समाज नैरोबी का 121वां एवं आर्य स्त्री समाज का 106 वां वार्षिकोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिल्ली सभा के महामंत्री, श्री विनय आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान,श्री भुवनेश खोसला जी, दक्षिण अफ्रीका से प्रधान किरण सतगुरु जी, पंडित रेशमा रामबरोस जी, पंडित उषा देवी प्रसाद जी इत्यादि अनेक अन्य गणमान्य महानुभावों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ 5 अक्टूबर को नैरोबी से 232 किलोमीटर की दूरी पर एक विशेष यज्ञ के आयोजन से हुआ। जहां पर आज से 126 वर्ष पहले आर्य जनों ने प्रथम बार यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित की थी, इस स्थान पर यज्ञ करना अपने आपमें एक ऐतिहासिक कार्य था। उपस्थित आर्यजनों ने यज्ञ में आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की और महर्षि दयानंद सरस्वती के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। श्री विनय आर्य जी ने उन महानुभावों को स्मरण करते हुए जिन्होंने सर्वप्रथम 1898 में यहां यज्ञ किया था, श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। इस स्थान पर यज्ञ के उपरांत ध्वजारोहण किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री देव जी और श्रीमती जीवन भोला जी, डॉक्टर आर के सैनी जी इत्यादि ने हवन स्थल पर स्मारक पट्टिका का अनावरण भी किया और वृक्षारोपण भी किया गया। श्री विनय आर्य जी और श्री राजेंद्र सैनी जी इत्यादि महानुभावों ने विशेष उद्बोधन दिया।

121वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, मधुर और प्रेरक भजन तथा लगातार वैदिक प्रवचन चलते रहे, जिससे संपूर्ण उपस्थित समूह लाभान्वित हुआ। विशेष रूप से 51 कुंडीय यज्ञ के भव्य आयोजन में मॉरीशस से आए पंडित सत्य प्रकाश बिगू जी ने ''असतो मा सद्गमय'' उपनिषद के वाक्य को आधार बनाकर प्रेरक संदेश दिया। विनय आर्य जी ने यज्ञ की अग्नि का महत्व बताते हुए नित्य प्रति यज्ञ करने का संदेश दिया। सायंकाल विशेष प्रवचन माला में वेदों के ऊपर आधारित प्रवचनों से सभी लोग लाभान्वित हुए।

आर्य समाज नैरोबी की 121वीं वर्षगांठ के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों में अलग-अलग मुख्य अतिथि रहे। डॉ. रवि बोरी जी और श्रीमती डॉक्टर तुला बोरी जी, दिल्ली आर्य प्रतिन सभा के महामंत्री विनय आर्य जी, आर्य समाज नैरोबी के प्रबंधक नैरोबी एशिया रेडियो के अभिजीत गुप्ता जी के समक्ष वहां पर एक विशेष सांस्कृतिक लोकनृत्य भी प्रस्तुत हुआ। ''जिसमें हम किसी से काम नहीं'' की भावना से सब मंत्रमुग्ध हो गए। अनेक विद्वानों द्वारा पारंपरिक आंदोलन से लेकर आधुनिक चुनौतियों तक इस विषय को ध्यान में रखते हुए प्रतिभाशाली बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जो अपने आप में अनुपम थे, महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जीवन मानवमात्र के लिए था यह भी प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर श्री राजशाही जी, नैरोबी वैदिक हाउस के ट्रस्टी श्रीमती चंदा साही जी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रोफेसर सुरेंद्र मोहन जी, दिल्ली से पहुंचे दिनेश पथिक जी के मधुर भजन और आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी का उद्बोधन अत्यंत प्रेरक और सारगर्भित सिद्ध हुआ। इस क्रम में श्रीमती मलिका सूद जी, श्री सुरेश सोफत जी द्वारा शनाया वालिया, प्रियंका वालिया जी, प्रिशा वालिया, वेन्या मोंगिया, अक्ष सूद, युजव शर्मा, रोहन भंडारी, आयुष भंडारी, सनम पाल, अंजलि सेठी, अंकुश गुप्ता, मुकेश भाई, अनमोल सेठी, आदित्य सेठ, और शिव मेहता आदि को उत्कृष्ट कार्यक्रमों में सहभागिता के लिए सम्मानित किया गया। "महर्षि दयानंद जी के 200 साल" और आर्य समाज नैरोबी 121 पार" सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति से सभी लोग मंत्र मुक्त हो गए।

समापन समारोह के अवसर पर आर्य स्त्री समाज नैरोबी की 106वीं वर्षगांठ मनाते हुए श्रीमती रीना जी ने बहुत सुंदर प्रेरक भजन प्रस्तुत किया। स्वामी वेदानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज के वैश्विक परिवर्तन और समाज सुधार के आंदोलन को आधार बनाकर आगामी योजनाओं का प्रस्तुतीकरण किया। "धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमें जगा दिया'' भजन के साथ यह प्रेरक और ऐतिहासिक कार्यक्रम अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ।

पृष्ठ 2 का शेष

हे गुरुदेव! दयानन्द ....

से पूर्व और उनके बाद भी अनेकों महापुरुषों ने भारत तथा विश्व में जन्म लिया, और यह क्रम अनवरत जारी है, लेकिन मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनकर जीना सिखाने वाले, व्यक्ति, परिवार, समाज, देश दुनिया को श्रेष्ठ बनने-बनाने के लिए ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' का उद्घोष करने वाले ऋषि दयानंद अनोखे, अनूठे और निराले थे। आज समाज में भ्रम का ज्ञान फैलाने वालों की बहुतायत है. अंधेरा फैलाने वालों का तांता है, लेकिन सत्य का सवेरा तभी आएगा, मनुष्य के भीतर प्रकाश तभी जगमगाएगा, जब मानवजाति ऋषि दयानंद के बताए वेद मार्ग पर चलेगी। इसलिए बाहर की दीवाली से बेहतर है कि हम वेदज्ञान से अपने अंत:करण को प्रकाशित करें।

- सम्पादक

वैदिक प्रवक्ता, प्रचारक एवं उपदेशकों के निर्माण हेतु चार वर्षीय प्रशिक्षण

(3 +1) वर्षीय वैदिक योग ध्यान एवं सिद्धांत प्रशिक्षण व वैदिक प्रवक्ता /प्रचारक/उपदेशक निर्माण पाठ्यक्रम / कोर्स + 1 वर्ष अंग्रेजी में भी प्रस्तुति देने हेतु योग्य बनने के लिए पुरुष वर्ग में प्रशिक्षण।

मार्गदर्शन, प्रशिक्षण एवं सान्निध्य
आचार्य आशीष आर्य, दर्शनाचार्य
आचार्य आत्मप्रकाश, व्याकरणाचार्य
एवं सहयोगी अध्यापक

-: आयोजक :-
आत्मोन्नति केन्द्र भड़ताना
जिला-जींद (हरियाणा)
901511688, 9416773617

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 21 अक्तूबर, 2024 से रविवार 27 अक्तूबर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 24-25-26/10/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23, अक्तूबर, 2024

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं संस्थाओं की ओर से

महर्षि दयानन्द सरस्वती

200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

141 वें निर्वाण दिवस

की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन

कार्तिक, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रमी सम्वत् 2081, तद्नुसार

बुधवार 30 अक्टूबर 2024

समय : अपराह्न 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक

कार्यक्रम

कार्यक्रम : यज्ञ, भजन, ध्वजारोहण, महर्षि जीवन भव्य नाटिका

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार रैली	मनीष भाटिया	आर्य सतीश चड्ढा
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामंत्री
9810855695	9910341153	9313013123

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पं.)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें

www.vedicprakashan.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण	विशेष संस्करण	पॉकेट संस्करण
(अजिल्द) 23x36%16	(सजिल्द) 23x36%16	
मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹60	मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80	मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	**स्थूलाक्षर** (सजिल्द) 20x30%8	**उपहार संस्करण**
मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100	मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120	मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	
मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160	मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200	

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह